

## पद १३८

(राग: काफी - ताल: त्रिताल)

करो कोई जप तप साधन । और कछु रामनाम सम नाहीं ॥ध्रु. ॥  
पूरब पश्चिम उत्तर दच्छिन । कोटि तीर्थ फिर आई ॥१॥ 'रा'  
कहते रघुबीरा पहुँचे । 'म' मुक्ती भर पाई ॥२॥ मानिक कहे तुम्हारे  
नाम प्रताप से । पत्थर सागरमांहि ॥३॥